RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में मानवीय चेतना

संदीप

प्राध्यापक – हिंदी, हिंदी विभाग, मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्य मानवीय भावनाओं से ओतप्रोत का साहित्य रहा है। उन्होंने कई विधाओं में अपना साहित्य सर्जन किया है, बल्कि यह कहना अधिक संगत होगा कि वे हिंदी साहित्य की कई विधाओं के प्रमुख और प्रतिनिधि साहित्यकार हैं। उनके निबंध, उपन्यास, इतिहास ग्रंथ, आलोचना ग्रंथ अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। उन्होंने अपने साहित्य में मानवीय पक्ष को सर्वोपरि माना है। हिंदी साहित्य में वे सबसे अधिक मानवता के पैरोकार रहे हैं। अपने साहित्य में उन्होंने 'मनुष्य की जययात्रा' और 'नर में नारायण' देखा है। उनकी 'मनुष्य' होने की परिभाषा में मानवीय होना है "मनुष्य समस्त संस्कारों, समस्त आरोपित मूल्यों और समस्त रीति रस्मों से बड़ा है। मनुष्यता की निरन्तर प्रवाहमान धारा मानव मूल्यों से शक्ति संग्रह करती हुई आगे बढ़ती जा रही है मनुष्य का इतिहास इन्हीं साधनाओं का इतिहास है।"

आचार्य द्विवेदी, आचार्य शुक्ल के बाद दूसरी धारा लेकर साहित्य में आए में आए ,उनके साहित्य में मानवीय पक्ष मजबूती से आया है। उनके साहित्य में मानवीय पक्ष कई सारे महापुरुषों, साहित्यकारों से प्रभावित रहा है। उनके साहित्य पर गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का बहुत अधिक प्रभाव रहा है उन्होंने शांतिनिकेतन में शिक्षण कार्य, लेखन कार्य और टैगोर के साथ विश्व मानव की धारणा को महसूस किया। रवीन्द्र बाबू के समष्टिगत विचारों को उन्होंने इस प्रकार अभिव्यक्त किया है:– "रवीन्द्रनाथ एक समष्टि मानव में विश्वास रखते थे यह समष्टि मानव सब मनुष्यों का आश्रय है। सबको मिलाकर विराजमान होने के कारण ही वह 'एकमेवा –द्वितीयम्' है। इस समष्टि मानव को हम अपनी भावनाओं और कार्यों के द्वारा अनुभव करते हैं या अनुभवगम्य बनाते हैं।" वे 'मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है' की परिभाषा लेकर साहित्य में आए और संपूर्ण साहित्य में उन्होंने मानवता को ही परिभाषित किया है। आचार्य द्विवेदी का साहित्य मानवीय मूल्यों को स्थापित करता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों की भावभूमि ऐतिहासिक हैं ।उनके चारों उपन्यास इतिहास के किसी न किसी कालखण्ड को लेकर चलते हैं। 'बाणभट्ट की आत्मकथा' सातवीं शताब्दी कालखंड को, 'चारुचंद्रलेख' तेहरहवी – चौदहवीं शताब्दी का कालखंड लेकर, 'पुनर्नवा' चौथी शताब्दी के कालखंड और 'अनामदास का पोथा' उपन्यास उपनिषदकालीन कालखंड को लेकर चलता है। ऐसे में यह प्रश्न सबसे पहले हमारे सामने आता है कि क्या वे अपने उपन्यासों में इतिहास को दोहराते हैं ?इसका उत्तर नहीं में ही आयेगा, क्योंकि वह इतिहास को 'शव साधना 'मानते हैं उन्होंने अपने उपन्यासों को 'विशुद्ध गप्प' कहा है। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि उन्होंने जब मध्यकालीन धर्म साधनाओं, अपभ्रंश और आदिकालीन साहित्य पर जब लिखा तब साहित्य रस लेने के लिए उन्होंने अपने उपन्यासों की सर्जना की है। लेकिन उनके उपन्यास केवल विशुद्ध गप्प नहीं है और न अतीत की पुनर्व्याख्या, बल्कि उन्होंने अपने उपन्यास ऐतिहासिक कालखंड के आधार पर लिखने पर समकालीन समस्याओं और वर्तमान जीवन की व्याख्या की है। दूसरे शब्दों में अगर कहे तो वे अपने उपन्यासों में परंपरा ,आधुनिक भाव बोध को प्रस्तुत करते हैं। उनके उपन्यासों में अतीत एवं परंपरा आधुनिकता एवं मानवता का सामंजस्य दिखाई देता है। डॉ मैनेजर पांडेय ने हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के बारे में कहा है:– ''यह ठीक है कि वर्तमान की आंख से ही अतीत और भविष्य को देखते हैं, लेकिन नवीनता के नशे में झूमने वाले ऐसे अच्छे आधुनिकतावादी नहीं है जिनका कोई कल नहीं होता केवल वर्तमान होता है और वर्तमान का भी केवल क्षण होता है। द्विवेदी जी इतने उतावले क्रांतिकारी भी नहीं है जो अतीत और वर्तमान को भूलकर केवल भविष्य के सपनों में खोया रहता है।''

उनके उपन्यासों में सामाजिक, राजनीतिक, प्रेम भावना, इतिहास और संस्कृति का चित्रण आदर्शवाद के आधार पर व्यक्त किया गया है। वे अपने सभी औपन्यासिक चरित्रों को आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते हैं उनका यही आदर्शवादी चित्रण मानवतावादी स्वर लेकर चित्रित हुआ है। 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास में बाण की चिन्ता वस्तुतः आचार्य द्विवेदी की चिन्ता बनकर इस प्रकार उल्लेखित हुई है– "महापुरुषों ने करुणा और मैत्री के अनेक उपदेश दिए है, भ्रातृभाव और जीव–दया के बहुत ग्रन्थ लिखे है, पर उन्हें सफलता नहीं मिली। मैं निराशा से कातर हो उठा हूँ। क्या यह कभी बंद नहीं होगा? क्या संसार की सबसे बहुमूल्य वस्तु इसी प्रकार अपमानित होती रहेगी? मेरा मन कहता था कि जब तक राज्य रहेंगे, सैन्य संगठन रहेंगे, पौरुष दर्प का प्राचुर्य रहेगा, तब तक यह होता ही रहेगा। परन्तु क्या कभी यह भी संभव है कि मानव समाज में राज्य न हो, सैन्य संगठन न हो, संपति मोह न हो? मैं कोई उत्तर खोज नहीं पा रहा था।"

2015, RHIMRJ, All Rights Reserved ISSN: 2349-7637 (Online)

आचार्य द्विवेदी जी के मानवीय भावों पर कबीर, कालिदास, संत भक्तकवियों, मध्यकालीन धर्म साधना का रहा है। वे अपने उपन्यास की निर्मिति मानवीय भावों पर ही करते हैं यही कारण है कि वे अपने औपन्यासिक पात्रों में बुरे से बुरे चरित्र में भी उद्दात्त, मानवीकरण गरिमा से ओतप्रोत करके ही प्रस्तुत करते हैं। उनके उपन्यास के सभी चरित्र सामाजिक कल्याण और अपने मनुष्य होने को प्रस्तुत करते हैं।

'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास का परिवेश हर्षकालीन है। इसमें बाण, निपुणिका और भट्टिनी के त्रिकोण प्रेम में मानवीय भाव है। उनके प्रेम में राष्ट्रीय भावना, परपीड़ा शामिल है। इसी प्रकार से 'चारु चंद्रलेख' उपन्यास के पात्र सातवाहन, मैना, चित्रलेखा में परस्पर प्रेम है लेकिन यह प्रेम एकांगी नही बल्कि उसमें सामाजिक पहलू ज्यादा है। 'पुनर्नवा' उपन्यास में आर्य देवरात और मंजुला का प्रेम आदर्श पर आधारित हैं, मंजुला नर्तकी है, लेकिन उसका प्रेम भावना पर आधारित प्रेम है उसमें किसी तरह की मांसलता नही, अकाल आने पर वह अपनी बेटी मृणालमन्जरी को देवरात को ही पालन के लिए देती है। यह प्रेम मानवता पर आधारित है इसका कोई अन्य विकल्प खोजा नही जा सकता। 'चारुचंद्र लेख' उपन्यास में सिद्धियों की भरमार है कथ्य की दृष्टि से इस उपन्यास में जादू टोना, तंत्र –मंत्र ,योग –साधना ,डाकिनी, सम्मोहन इत्यादि की भरमार है, लेकिन इस परिवेश में भी आचार्य द्विवेदी सिद्धियों की तपस्या को एकांत मानते हैं और सिद्धियों का मखौल उड़ाते हैं। 'पुनर्नवा' राजतंत्र व्यवस्था में प्रजातांत्रिक व्यवस्था की स्थापना करता है।इस उपन्यास में सभी राजनीतिक, सामाजिक , धार्मिक व्यवस्थाओं को युगानुकूल परिवर्तन पर बल दिया गया है। 'अनामदास का पोथा' उपन्यास में औपनिषदिक काल ,आध्यात्मिक विचार मंथन होने के बावजूद समकालीन चेतना व्यक्ति के दुख– दर्द को केंद्र में लिया गया है।

आचार्य द्विवेदी अपने उपन्यासों का कथ्य चाहे वह किसी प्रकार से रखे लेकिन वे मानवीय दृष्टिकोण को सबसे पहले रखते हैं। ऐतिहासिक कालखण्ड को प्रदर्शित करने के लिए आचार्य द्विवेदी उस युग का वातावरण हमारे सामने रखते हैं। द्विवेदी जी के उपन्यासों का परिवेश ही हमें तत्कालीन युग की सैर कराता है, वे सांस्कृतिक रूप से उस युग का सजीव चित्र प्रस्तुत करते हैं। आचार्य द्विवेदी मध्यकालीन, सांस्कृतिक चित्रण में आधुनिक दृष्टि को अभिव्यक्त किया है। डॉ.नित्यानंद तिवारी जी ने इस बारे में कहा है कि–''हजारी प्रसाद द्विवेदी को किसी निश्चित विशेषज्ञवाद के अंतर्गत नहीं रखा जा सकता। प्रेमचंद के यहां आदमी, परिस्थितियों से लड़ता हुआ आदमी, हारता हुआ आदमी, उलझता हुआ आदमी चित्रित है। यानी इस प्रकार की जिंदगी बहुत महत्वपूर्ण है जो सारे वादों के घेरे को अतिक्रमण करती है। द्विवेदी जी के साहित्य में भी इसी प्रकार हम पाते हैं कि मध्ययुग का आदमी परिस्थितियों के भीतर किस प्रकार उलझा हुआ है, किस प्रकार लड़ा है और किस प्रकार उबर रहा है इसका चित्रण किया गया है।''

'चारु चन्द्रलेख' उपन्यास के पात्र अलग अलग तरीके की सोच के पात्र हैं लेकिन वे सामूहिक रूप से समाज कल्याण के लिए कार्य करते हैं। राजा सातवाहन के चिंतन में विदेशी ताकतों को परास्त करने की भावना है। रानी चंद्रलेखा योगसिद्धि द्वारा समूची मानवता को शोक– रोग से मुक्त करना चाहती है। विद्याधर भट्ट युद्ध और कुटिल नीति द्वारा विदेशी शक्तियों से मुक्त करने की भावना को लेकर चलते हैं। बोधा प्रधान युद्ध की प्रासंगिकता को व्यक्त करते हुए कहते हैं – "हम राज्य के लिए युद्ध कर ही कब रहे थे? राज्य एक व्यक्ति को नहीं मिलेगा, तो पूरे देश को मिलेगा नहीं मिलेगा तो किसी को नहीं मिलेगा।" 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास का सूत्र वाक्य है– "किसी से न डरना, गुरु से भी नहीं, मंत्र से भी नहीं, लोक से भी नहीं, वेद से भी नहीं।" यह निर्भीकता ही लोककल्याण के लिए मनुष्य को प्रेरित करती है। इस उपन्यास में यह भी आया है कि "न तो प्रवृत्तियों को छिपाना उचित है, न उनसे डरना कर्त्तव्य है और न लज्जित होना युक्तियुक्त है।" 'पुनर्नवा' में भी कहा गया है – "लोकापवाद झूठ पर आधारित झूठा प्रंपच है। लोकस्तुति उससे बड़ा धोखा है।" इस उपन्यास में अन्यत्र भी कहा गया है "सच्चा सुख अपने आपको दलित द्राक्षा की भांति निचोड़कर उपलब्ध माधुर्य रस को लुटा देने में है।" 'बाणभट्ट की आत्मकथा' मनुष्य मुक्ति की उद्घोषणा करता है। इस उपन्यास में सत्ता, वर्चस्व और प्रेम में मुक्ति का स्वर है।

'पुनर्नवा' का हर पात्र मानवीय मूल्यों की रक्षा करता है। चंद्रमौली जो कालिदास का ही प्रतिरूप है वह अपने उद्भावना में मानवता को प्रस्तुत करता हुआ कहता है :–"दो तरह की रचनाएँ होती है एक प्रकार की रचना विधाता की सृष्टि है दूसरी तरह की रचना मनुष्य की सृष्टि है। स्वयं मनुष्य पहली श्रेणी में आता है। मनुष्य और प्राकृतिक वस्तुओं, जीव–जन्तुओं, लता–पादपों की रचना एक ही कर्त्ता के द्वारा हुई है इसीलिए हम इन प्राकृतिक वस्तुओं की निर्माण विधि की आलोचना नहीं करते। वह जैसी बनी है, वैसी बनेगी ही। हम उनसे सुख पा सकते हैं, दुख पा सकते हैं, पर वे हैं.....पर जो व्यवस्था मनुष्य ने बनाई है उसकी बात और है। उसमें दोष है तो उसे बदला जा सकता है।" 'अनामदास का पोथा' उपन्यास उपनिषदकालीन दार्शनिक तात्विक विचार को समझाता है लेकिन यह तात्विक दर्शन मानवता के बिना अधूरा है, जाबाला कहती है कि "मेरा अन्तरतर आज चिल्लाकर कह रहा है कि शरीर, मन, प्राण सभी विनश्वर साधन तभी तक सार्थक है जब उन्हें दुखियों का दुःख दूर करने में लगा दिया जायेगा।" रैक्व के चरित्र में भी दीन दुखियों के लिए काम करने की भावना जाग्रत होती है और वह अकाल ग्रस्त समाज की सेवा करता है। आचार्य द्विवेदी के मानवीय भाव में आदर्शवाद की स्थापना है, लेकिन यह आदर्शवाद कोरा स्वप्न और खोखला नहीं है बल्कि उनका आदर्शवाद मनुष्य होने की सार्थकता हमें बताता है। अपने सभी उपन्यासों में

उन्होंने प्रेम का उज्ज्वल पक्ष प्रस्तुत किया है। यहां पर प्रेम – समर्पण, त्याग, बलिदान के बगैर अधूरा है। वह सफलता और सार्थकता में अंतर बताते हैं उनके उपन्यासों में ज्यादातर स्त्री पात्र ही प्रेम को अभिव्यक्त करती है । निपुणिका ,मैना का प्रेम सफल नहीं होता, लेकिन वह प्रेम को सार्थकता प्रदान जरूर करती है। 'चारु चन्द्रलेख' की मैना भी प्रेम करती है वह बोधा प्रधान को कहती हैः– "ऐसा जान पड़ा जैसे जन्म जन्मातर से इसी लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए अनादिकाल से आयोजन करते आ रहे थे। सत्य कहती हूँ प्रधान, मन में जो भाव था वह लोभ नहीं था, पा लूँ, ऐसी लालसा नहीं थी, केवल यही भाव था कि अपने को निःशेष भाव से उडेलकर दे दूँ।" 'पुनर्नवा' की मृणाल और चन्द्रा का प्रेम भाव सौत का नहीं है, बल्कि वे एक दूसरे के प्रति आदर सम्मान का भाव रखती है। 'अनामदास का पोथा' के प्रेम में मानवीय पक्ष को सम्मिलित किया गया है। जाबाला के प्रति रैक्व का आकर्षण ही उसे सामाजिक बनाने में मदद करता है और वह दीन दुखियों की सेवा करता है। द्विवेदी जी के स्त्री पात्र मानवीय करुणा की प्रतिनिधि है इनके पुरुष पात्र जहां प्रेम को स्वीकार करने और प्रेम को प्रकट करने में उदासीन है वही स्त्री पात्र निपुणिका, मैना, मृणाल, चन्द्रा, भट्टिनी, सुचरिता हिंदी साहित्य की अमूल्य और आर्दशमयी स्त्रियां है।

सामाजिक पहलुओं पर विचार किया जाए तो द्विवेदी जी व्यष्टि की अपेक्षा समष्टि भाव की स्थापना करते है। सामाजिक कल्याण, मानव कल्याण की भावना इनके हर उपन्यास में मिलता है फिर वह चाहे स्त्री, पुरुष, राजा, साधारण जनता, किसान, सैनिक, मजदूर, दास, गणिका साध्वी, कवि, साधु इत्यादि कोई भी हो। 'बाणभट्ट की आत्मकथा' का बाणभट्ट विश्वकल्याण, विश्वमानव का प्रतीक है। लेखक ने कहा है– "बाणभट्ट केवल भारत में ही नहीं होतें। इस नरलोक से किन्नरलोक तक एक ही रागात्मक हृदय व्याप्त है।" 'चारुचन्द्रलेख' उपन्यास में भी यही भावना प्रकट हुई है "स्वर्ग का देवता पृथ्वी पर भाला तलवार लेकर नहीं आता। जो लोग धर्म बुद्धि सम्पन्न है उन्हीं को वे सुबुद्धि और शक्ति देते हैं। यह सुबुद्धि ही देवता है, शक्ति ही देवता है। तुम्हारे भीतर देवता काम कर रहा है। तुम खूब अच्छी तरह समझ लो बेटा, भगवान तुमको निमित्त बनाकर दुष्टों का दमन करना चाहता है।"

'पुनर्नवा' का गोपाल आर्यक अन्याय और अत्याचार के सामने झुकता नहीं, बल्कि वह प्रजा को न्याय दिलाने के लिए तैयार रहता है। बाणभट्ट स्त्री मुक्ति के लिए सत्ता से टकराता है। आलोचक त्रिभुवन सिंह जी ने इनके उपन्यासों के बारे में कहा है – ''द्विवेदी जी के उपन्यासों में सामाजिक कल्याण की दृष्टि बराबर सजग रही है और उन्होंने इतिहास और पुराण के उन्ही सन्दर्भों को अपने उपन्यासों के लिए उप जीव बनाया है जो कि उनकी मानवतावादी चेतना को पुष्ट करने में सहायक सिद्ध हुए हैं।''

आचार्य द्विवेदी सबके लिए न्याय, समानता, स्वतंत्रता की स्थापना करते हैं। इनके हर उपन्यास में राजा स्वयं उपस्थित होता है लेकिन राजा तानाशाही विचारों का नही है बल्कि वह अपने निर्णय को प्रजा हित के लिए बदलाव भी लाता है। समुद्रगुप्त, हर्षवर्धन, कृष्णवर्धन, जानश्रुति, सातवाहन प्रजावत्सल है और प्रजा में जाकर एकता स्थापित भी करते हैं। 'पुनर्नवा' उपन्यास में चन्द्रा प्रकरण में समुद्रगुप्त अपने न्यायिक निर्णय पर विचार करते हैं बल्कि युगानुकूल अपने निर्णय को बदलते भी हैं। राजा जानश्रुति तत्व चिंतन के साथ प्रजा के बारे में सोचते हैं।

आचार्य द्विवेदी ने अपने उपन्यासों की चरित्र सृष्टि पात्रों की मानसिकता, क्रियाकलापों द्वारा भी मानवता को स्थापित किया है। इनके सभी पात्र ईर्ष्या, लोभ, लालच ,माया ,मोह, लालच स्वार्थ भावना से पीड़ित नहीं है ,बल्कि मनुष्य होने के सभी सही अर्थ को प्रकट करते हैं। भट्टिनी बाण के बारे में कहती है "तुम इस म्लेच्छ कही जानेवाली निर्दय जाति के चित्त में संवेदना का संचार कर सकते हो, उन्हें स्त्रियों का सम्मान करना सीखा सकते हो, बालकों को प्यार करना सीखा सकते हो–तुम्हारी वाणी मेरी जैसी अबलाओं में भी आत्मशक्ति का संचार करती है। तुम्हारी छाया पाकर अबलाएँ भी इस देश की सामाजिक जटिलता को कुछ शिथिल कर सकती है।" इनके सभी पात्र प्रगतिशील है। महामाया साध्वी है, लेकिन विदेशी शक्तियों के खिलाफ एकजुट करती है। ऋतंभरा रैक्व को समाज प्रेम के लिए अभिप्रेरित करती है। 'चारु चंद्रलेख' की चन्द्रा में समाज कल्याण के लिए बड़े से बड़े त्याग करने की भावना है। इनके सभी पात्रों में बेचैनी, करुणा, प्रेम, लोक सेवा प्रकट करने की भावना है। आचार्य द्विवेदी के उपन्यासों का मूलाधार मानवता है। उनके उपन्यास एक बड़े परिवेश, कालखण्ड और सामाजिक व्यवस्था को लेकर चलते हैं लेकिन उनमें द्विवेदी जी ने अपने मानवीय भावों को ही प्रस्तुत किया है।

संदर्भ

1. हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली–7, पृष्ठ संख्या 168, राजकमल प्रकाशन दिल्ली 02, संस्करण, 1989
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली–8, पृष्ठ संख्या 431, राजकमल प्रकाशन दिल्ली 02, संस्करण 1989
3. आलोचना (पत्रिका), अंक 47– 49 पृ.सं. 50
4. बाणभट्ट की आत्मकथा : हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ संख्या 92– 93, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, दो पांचवा संस्करण 1993

5. साहित्य, इतिहास और आधुनिक बोध :सं. कृष्णदत्त शर्मा, हरिमोहन शर्मा, पृष्ठ संख्या 331, स्वराज प्रकाशन दिल्ली 02, प्रथम संस्करण– 2004
6. चारु चंद्रलेख : हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ सं. 275, राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली 02 ,सातवां संस्करण 1993
7. बाणभट्ट की आत्मकथा : हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ संख्या ,105
8. बाणभट्ट की आत्मकथा : हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ सं. 66
9. पुनर्नवाः हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ संख्या 124 , राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 02, छठा संस्करण 2001
10. पुनर्नवा : हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ संख्या 141
11. पुनर्नवा : हजारीप्रसाद द्विवेदी पृष्ठ संख्या 146
12. अनामदास का पोथा :हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ संख्या 75, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 02, छठी आवर्ती 2000
13. चारु चंद्रलेख : हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ संख्या, 300
14. बाणभट्ट की आत्मकथा : हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ सं., 234
15. चारु चंद्रलेख : हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ संख्या, 219
16. उपन्यासकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदीः त्रिभुवन सिंह, पृष्ठ संख्या, 200, वाराणसेय संस्कृत संस्थान वाराणसी 02, प्रथम संस्करण 1981
17. बाणभट्ट की आत्मकथा : हजारीप्रसाद द्विवेदी,पृष्ठ सं., 207

2015, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)